साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 01
February 2015

प्रकृति के रंग (अमल वर्षा)

राकेश कुमार वर्मा
कवि, लेखक, आर्टिस्ट (www.linsays.org)

गर्मी के आगाज ने बदिरा के पार,
हलचल की और उम्मीद से सर उठाया,
पसीने से तर, चहरे पर,
वो ठंडे मोती -सा नजर आया...
चहरे की खुशी हजारो गुना हो गयी,
जब तेजी-से बादल गहराया,
मन का मयूरा बूंदों की छप-छप संग,
अनजाने से उल्लाश से भर,
भीतर से मुझे दोडा लाया...
सफेदी में चमकती मेरी बनयान,
बूंदों से चित्रित होने लगी थी,
मेरे चश्मे की चमक धुंधली सी होने लगी थी,
ये इक्कीसवी सदी की बरखा थी,
और मै इक्कीसवी सदी का बुढा,
मेरे आँखों में आज भी कल की,
निर्मलता का वही सहस दर्श्य था,
जो आज विहंगतम हो चला है,
फिर भी दिल के उजाश को,
चुलबुलेपन की आड़ में दबाये,
मै बाहर दोडा.....
मेरे बनियान की चमक,

साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN: 2454- 2695
Volume 01 Issue 01
February 2015

कुछ फीकी अब जान पड़ती थी,
कुछ चित्रित था सायद मेरी बनियान की,
काया पे..
धूमिल-सा, कालिक-सा,
रंगीलापन था?
या मटमैला पण?
प्रकर्ति की अव्दितीय कला को निरखते,
और कोमल बरखा से बदन को सिचंते,
अभी चार पल भी न हुए, के
आँखे जलने लगी,
तन से जेसे फोड़े फूट पड़े हो,
मेरे बनियान की रश्क दीवार को भेद,
वो बरका की नरमी मुझे जलने लगी थी,
मै दोड़कर अन्दर आ गया.
क्या हुआ?
कैसे हुआ?
ऐसा पहले तो नहीं हुआ,
ये कठोरता पहले तो नही थी,
कहाँ से, और कैसे आई ये कठोरता?
मेरे दिमाग की नाशो में जेसे,
सारे सवाल एक साथ उठ खड़े हुए,
मेने मोनू को बहार जाने रोका,
बहू को सर भिगोने से रोका,
कुछ तो बदल गया है?
कुछ तो बदल गया है?
ये प्रकृति का रंग तो नहीं है,

ISSN: 2454- 2695

साहित्य संहिता

Volume 01 Issue 01
February 2015

Available at http://sahityasamhita.org/

वो तो इतनी भयावह नहीं थी,

करीब घंटे भर का तांडव के बाद,

बदलो का सहर, इस सहर से दूर गया,

संध्या हुई,

मै फिर बागान में आया,

मगर प्रकृति की एक माया से,

दूसरी माया-से भरे फूलो को,

मुर्दा पाया.....

प्रकृति ने प्रकर्ति को आज था निगला,

तब मुझे मेरी प्रकृति का ख्याल आया१